नई लातिन इमला

वर्ण विचार

वृहत्तम विवेचित ध्वनात्मक विश्लेषण

हिंदी में अगणित ध्वनियाँ उपलब्ध मानी जाती है। इनमें से कुछ इतने अनूठे हैं की साधारण संवाद में इनका व्यवहार होते होते रह जाता है। ध्वनात्मक दृष्टिकोण से मेरे विचार से यही बात हिंदी को श्रेष्ठतम साहित्यिक भाषाओं में से एक बनाती है। यह एकमात्र परिपूर्ण आदर्श मानक भाषा होने की पुष्टि करती है, संपूर्ण उत्तर भारत (आर्यभाषी) क्षेत्रों में। तथापि, संपूर्ण एवं नियमित ध्वनात्मक चिह्निति देवनागरी एवं अरबी लिपि द्वारा नहीं हो पाई है। इससे यही ज्ञात होता है की हिंदी जितनी श्रेष्ठ है उसके हिसाब से उसकी लिपि भी श्रेष्ठ होनी चाहिए थी, जोकि नहीं हो पाई है। यह अन्याय (नाइंसाफ़ी) है।

अरबी, फ़ारसी, संस्कृत और तुर्की भाषा से आने वाले अनेक ध्वनियाँ हिंदी भाषा में समाहित हो चुकी हैं। इतनी ध्वनियाँ कि हिंदी–उर्दू के विशेषज्ञ परस्पर में ही इस वर्ण विचार के ज्ञान में अपूर्ण रह जाते हैं।

प्रायः (सारे नहीं) समस्त भारतवासियों के जीवन में धर्म की बहुत ही बड़ी भूमिका रहती है। और धर्म के बारे में जानने हेतु 'धर्म के संकेत माध्यम' (यानि 'धर्मोपयोगी या धार्मिक भाषा') का परिपूर्ण एवं सुस्पष्ट ज्ञान होना आवश्यक है। सामान्यतः हम निर्दिष्ट लिपि को ठीक तरह समझे बग़ैर इनका इस्तेमाल करते हैं, अमूमन ही सही (क्यों इसकी चर्चा बाद में होगी)। परंतु मेरे विचार से कोई सुस्पष्ट लिपि ही नहीं तदोपरांत परिपूर्ण एवं सरलतम व्यवहार युक्त लिपि का होना आवश्यक है। लिपि को पवित्र नहीं, सर्वगुण संपन्न होना उसके आदर्श होने का परिचायक है। किसी धार्मिक भाषा में व्यवहृत लिपि का यह शर्त पूर्ण करना अत्यंत आवश्यक है। ताहम, निम्नलिखित वर्ण–समूहों का आकलन करें जिससे ही हिंदी परिपूर्ण हो सकती है (*देखिए पन्ना 2; IPA 'अंतरराष्ट्रीय ध्वनात्मक वर्णमाला' समकक्षों के लिए परिशिष्ट A देखिए*)।

साथ ही, कुछ क्षेत्रों में मूल रूप से महाप्राण कुछ वर्ण महाप्राणिता छोड़ 'तान' या 'खींच' का स्वरूप ले लेते हैं। ऐसा पंजाबी भाषा में देखा गया है–

(1) चढ़ाई (2) उतराई (3) सामान्य

अतः हिंदी के लिए अब एक सुग्राही सरल नियमित लिपि की आवश्यकता है जो शुद्ध एवं कठोर हो, पर व्यावहारिक सरल लेकिन अतिसूक्ष्मतापूर्ण भी हो। कुछ विषयों में संस्करण विचार इस किताब 'भाषाविज्ञान' (लेखक : डॉ० भोलानाथ तिवारी) से लिए गए हैं।

स्वर

हिंदी के अनुसार

मूल :	अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ए	ऐ	ओ	औ
विकल्प :								ऍ		ऑ

गोले में आए अक्षर-युग्म एक ही ध्वनि के परिचायक हैं।

संस्कृत के अनुसार

मूल :	ऋ	ॠ	ऌ	ॡ	ऐ[1]	औ[1]

दक्षिणी भाषाओं के अनुसार

मूल :	ए[1]	ओ[1]

(मूल स्वरों के दीर्घरूप)

व्यंजन

पारंपरिक ध्वनियाँ संस्कृत से

मूल :	क्	ख्	ग्	घ्	ङ्
	च्	छ्	ज्	झ्	ञ्
	ट्	ठ्	ड्	ढ्	ण्
	त्	थ्	द्	ध्	न्
	प्	फ्	ब्	भ्	म्
	य्	र्	ल्	व्	
	श्	ष्	स्	ह्	
			ज्ञ्		

देशीय लौकिक ध्वनियाँ

मूल :			ड़्	ढ़्
				व्[1]
बाहरी :		ख़्	ग्॒	
	च़्	छ़्	ज़्	
			ज्॒	
		थ़्	द्॒	ध़्
		फ़्	ब्॒	
			ळ्	
			ळ्[1]	

अन्य परिचित–अपरिचित महाप्राण ध्वनियाँ

मूल :	ण्ह्	न्ह्	म्ह्	
		ञ्ह्	ल्ह्	०ह्
			ळ्ह्	०ह्[1]
	श्ह्	ष्ह्	स्ह्	

पूर्णतः अजनबी (विदेशी) ध्वनियाँ

मूल :	अ़्		
	क़्	ग़्	
		ज़्[1]	झ़्
		ज़्[2]	
	त़्		
		स़्	ह़्

शायद आपको पढ़ते समय
मुझसे कोई शिकायत हो !

जी हाँ दोस्तों! यह कोई हमारा नया इजाद नहीँ है। हम इस किताब को उच्चारण और मानकता के दृष्टिकोण से उत्तम बनाने का प्रयास कर रहे हैं। केंद्रीय हिंदी निदेशालय (सेंट्रल हिंदी डायरेक्टरेट) के निर्देशोँ और सलाहोँ मेँ इस तरह की छपाई करने की अनुमति है। इसीलिए आपको हर उचित स्थान पर जहाँ अनुनासिक की ध्वनि प्राप्त होती है वहाँ आपको हरवक़्त चंद्रबिंदु नज़र आएगा। यह सलाह बच्चोँ की किताबोँ के लिए विदित थी। हम यथासंभव प्रयास कर रहे हैँ कि जहाँ तहाँ केवल हिंदी लेखन के मानक नियमोँ का "अतिसूक्ष्मतः" पालन किया जाए। धन्यवाद।

लेखक के जानिब से

प्रथम

पहला परब

विरामचिह्न

मुख्य बिंदु :–

(1) लातिन में प्रचलित इन सभी विरामचिह्नों का प्रयोग होगा।

(2) लातिन लिपि में ये विरामचिह्नें मूलतः आंग्लभाषीय (अंग्रेज़ी) पद्धति का अनुसरण करेंगी।

(3) लातिन में व्यवहृत वे विरामचिह्न जो हिंदी में इस्तेमाल होंगे वे निम्नलिखित हैं।

1.1	पूर्ण विराम	.	प्रत्येक वाक्य के बाद नुक़्ता यानि बिंदी
1.2	अल्प विराम	,	वाक्यों के अंदर थमाव (ठहराव) के लिए
1.3	प्रथम कोष्ठक	( )	
1.4	द्वितीय कोष्ठक	{ }	
1.5	तृतीय कोष्ठक	[ ]	
1.6	टेढ़ी रेखा	/	अथवा भाव या विकल्प भाव बोधक
1.7	अर्ध विराम	;	
1.8	उद्धरण चिह्न	“ ”	
1.9	शब्द चिह्न	‘ ’	
1.10	लोप चिह्न	...	किसी बोलचाल के अंत न होने या लगे रहने का सूचक
1.11	विस्मयादि बोधक	!	विस्मय, शोक, आश्चर्य आदि भावों को प्रकट करता है
1.12	ऊर्ध्व अर्ध विराम	’	जैसे 1991 = ’91 ; कार्बोक्सिलीकरण = का’करण
1.13	हंस पद	^	छूटे पद को प्रदर्शित करना जिसे दो पदों के बीच शामिल होना है उदाहरणार्थ, “मोहन ^खेल रहा है”
1.14	योजक चिह्न	-	दोहराए गए किसी पद या संबंधित पदों के बीच लगाना है
1.15	विवरण चिह्न	:–	
1.16	निर्देशक चिह्न	–	
1.17	संक्षेप सूचक	.	दिनांक = दि० ; मो० क० गांधी ; हिं० अ० पार्टी
1.18	उपविराम	:	
	कुछ नए चिह्न		
1.19	प्रधान कर्ता कारक	‹ ›	उदाहरणार्थ, “‹हाइड्रोजन› लिथियम और बेरिलियम से भिन्न है”
1.20	परदेश ध्वनि सूचक	« »	उदाहरणार्थ, “«Hollande» फ्रांस के राष्ट्रपति थे” “उस कंपनी का नाम «Škoda» है”

दविितीय

दूसरा परब

स्वर

स्वर वर्ण समूह तथा उनका प्रयोग

मुख्य बिंदु :–

(1) स्वर व्यवस्था वार्णिक है, मात्रिक व्यवस्था का यहाँ प्रयोजन नहीँ होगा।

(2) आधुनिक हिंदी बोलचाल की दृष्टि से देवनागरी की तुलना मेँ अधिक विस्तृत होगा एवं अधिक सुस्पष्टता, सूक्ष्मतर सुगमता और सरलता, प्रायोगिक तौर पर।

(3) उन्नत नियमन।

(4) आकृति के आधार पर वर्ण दो प्रकार के हैँ–

(i) चिह्न विहीन

(ii) चिह्न सहित जो दीर्घकारक है

(iii) चिह्न सहित जो भिन्नात्मकता दर्शाए (भिन्नता सूचक चिह्न)

(5) साथ ही साथ, चंद्रबिंदु–ध्वनि यानि अनुनासिक को चिह्नित करने की प्रणाली जो बहुत उन्नत हो, देवनागरी की तुलना मेँ।

(6) विस्तृत स्वरोँ की संख्या 10 है।

2.1 चिह्न विहीन स्वर ऐसे होते हैँ

Aa	**Ee**	**Iı**	**İi**	**Oo**	**Uu**
आ	ए		इ/ई	ओ	उ/ऊ

2.2 चिह्न युक्त स्वर जो भिन्नात्मकता दर्शाए

Ãã	**Ää**	**Ĕĕ**	**Õõ**
ऐ	ऍ	अ	औ/ऑ

<u>नोट :</u> 'ऍ' वस्तुतः वह उच्चारण है जब मुँह को खुला रखकर बोला जाए। दूसरी ओर 'ऐ' वह उच्चारण है जिसे आम तौर पर स्तरीय माध्य मेँ मुँह खुला रखकर बोला जाए। इस लिपिक प्रणाली (लातिन) मेँ इनमेँ भेद किया गया है।

देवनागरी लेखन मेँ 'ऑ' और 'औ' उच्चारण मेँ समान हैँ। इसलिए उनमेँ भेद नहीँ किया गया है। उनके लिए एक ही अक्षर प्रदत्त है।

2.3 इन अक्षरोँ के नीचे ' ˛ ' लगाने से इन स्वरोँ मेँ तात्कालिक अनुनासिकता पैदा हो जाएगी

Ąą	**Ęę**	**İį**	**Ǫǫ**	**Ųų**	**Ą̃ą̃**	**Ą̈ą̈**	**Ę̆ę̆**	**Ǭǭ**
आँ	एँ	इँ/ईँ	ओँ	उँ/ऊँ	ऐँ	ऍँ	अँ	औँ/ऑँ

2.4 इन अक्षरोँ के ऊपर ' ^ ' चिह्न रखने से इनकी दीर्घता बढ़ती है, ऐसे अक्षर निम्नलिखित हैँ

Êê	**Îî**	**Ôô**	**Ûû**	**Ę̂ę̂**	**Į̂į̂**	**Ǫ̂ǫ̂**	**Ų̂ų̂**
ए[1]	ई	ओ[1]	ऊ	एँ[1]	ईँ	ओँ[1]	ऊँ

2.5 ‘Iı’ अक्षर का इस्तेमाल ‘य’ वाले उच्चारण से इन मामलों में संबद्ध है, जैसे

परिशिष्ट B में देखिए : इस अक्षर के बारे में विस्तृत जानकारी

Ia	इया	किया	Kıa
Ie	इए	लिए	Lıe
Io	इओ	इकाइओँ	İkaıǫ
Iu	इउ/इऊ	पिऊँ	Pıû̧

‘क्या’, ‘ज्या’, ‘ज़्यादा’ इन शब्दों में इसके विपरीत ‘y’ अक्षर ‘ı’ को प्रतिस्थापित करेंगे

Kya	Jya	Zyada
क्या	ज्या	ज़्यादा

2.6 कश्मीरी और बड़ो में इन अक्षरों का प्रयोग योज्य है

Ũũ	Ÿÿ
उ'	ऑ

तृतीय
तीसरा परब
व्यंजन

I

3.1.1 व्यंजनों में पहला वर्ग उनका है जिन्हें आसानी से बोला जा सकता है, इसलिए इनके ज़्यादातरों में हमने कोई चिह्न नहीं लगाया है

Bb	Cc	Dd	Ff	Gg	Hh
ब्	च्	द्	फ़्	ग्	ह्
Jj	Kk	Ll	Mm	Nn	Pp
ज्	क्	ल्	म्	न्	प्
Qq	Rr	Ss	Tt	Vv	Xx
क़्	र्	स्	त्	व्	ख़्
Yy	Zz				
य्	ज़्				

उच्चारण कठिनाई स्तर : आसान या सरल

3.1.2 इनके महाप्राण रूप हैं

B́b́ भ्	**Ćć** छ्	**D́d́** ध्	**Ǵǵ** घ्	**J́j́** झ्	**ḰḰ** ख्
ĹĹ ल्ह्	**Ḿḿ** म्ह्	**Ńń** न्ह्	**Ṕṕ** फ्	**Ŕŕ** ऱ्ह्	**T́t́** थ्
V́v́ व्ह्					

II

3.2.1 व्यंजनों का दूसरा वर्ग मूलतः विदेशी तत्त्वों से आने वाले या देशीय–आधुनिक प्रवृत्ति वाले व्यंजनों का है, इन्हें परिवर्तक चिह्नों के सहारे दर्शाया जाएगा

परिशिष्ट C में देखिए : इन व्यंजनों के लिए विशिष्ट निर्देश

Çç च़्	**Ğğ** ग़्	**Ňň** ङ्	**Ññ** ञ्	**Ŭŭ** व्[1]	**Žž** झ़्
Ăă अ़्					

उच्चारण कठिनाई स्तर : सरल/मध्यम

3.2.2 इनके महाप्राण रूप

Ç̭ç̭ छ़्	**Ŭ́ŭ́** व्ह्[1]

III

3.3.1 तृतीय वर्ग : मूर्धन्य ध्वनियाँ

Ḑḑ ड्	**Ļļ** ळ्	**Łł** ळ्[1]	**Ņņ** ण्	**Ŗŗ** ड़्	**Šš** श्
Şş ष्	**Ţţ** ट्				

उच्चारण कठिनाई स्तर : कठिन

3.3.2 इनके महाप्राण रूप

D̠̭d̠̭	**L̠̭l̠̭**	**N̠̭n̠̭**	**R̠̭r̠̭**	**T̠̭t̠̭**
ढ्	ळह्	णह्	ढ़्	ठ्

चतुर्थ
चौथा परब
आरोहावरोहण या तान

4.1 आरोहावरोहण (आरोह–अवरोहण) की प्रणाली मेँ वैश्विकीकरण सुविधार्थ चीनी मांदरिन के पिनयिन लातिनीकरण व्यवस्था को आधार बनाया गया

4.2 इन चिह्नोँ को पंजाबी ध्वनियोँ को चिह्नित करने हेतु बनाया गया

4.3 यह प्रणाली परिवर्धित रूप में मणिपुरी (मैतई) व अन्य पूर्वोत्तारीय भाषाओँ पर भी प्रयोज्य है

सामान्य स्तर	**a**
गिरना (अवरोहण)	**à**
उठना (आरोहण)	**á**
उठना–गिरना	**ǎ**
गिरना–उठना	**ả**
ऊँचा सुर	**â**
निचला सुर	**ā**

पंचम
पाँचवाँ परब

5.1 नासिक्य व्यंजनोँ का योजन जब ये संयुक्त अक्षर बनने मेँ पहले आते होँ : देवनागरी के अनुस्वार विधि के विपरीत यहाँ अनुस्वार का प्रयोग नहीँ होगा, बल्कि उच्चारण की वैज्ञानिकता के मद्देनज़र चारोँ ‘न’–ओँ का पृथकीकरण किया जाएगा, इनका व्यवहार निम्नलिखित है

क–वर्ग वर्णोँ से पूर्व	ङ्	**N̆n̆**
च–वर्ग वर्णोँ से पूर्व	ञ्	**Ñ̆ñ̆**
ट–वर्ग वर्णोँ से पूर्व	ण्	**Ņņ**
त–वर्ग वर्णोँ से पूर्व	न्	**Nn**
प–वर्ग वर्णोँ से पूर्व	म्	**Mm**

हालाँकि, यदि देशीय–तद्भव शब्दोँ मेँ दोनोँ के योग से बने शब्दोँ मेँ दोनोँ के बीच पहले शब्द के अंत मेँ नासिक्य व्यंजन आता है [जो सदैव **Nn**, यानि 'न' होगा] तो वह परिवर्तित नहीँ होता

5.2 अरबी-फ़ारसी और तुर्की के शब्दोँ मेँ **Ňň, Ññ, Ņņ** न होने के कारण मध्य मेँ कोई भी नासिक्य व्यंजन का उच्चारण सदैव **Nn** होगा, जोकि 'न' का समपूरक है

5.3 लेखन मेँ लेखक के अनुसार स्वरहीन अंत का व्यंजन यदि नासिक्य हो तो **Nn** और ' ˛ ' (ओगोनेक) का विकल्प अवश्य उपलभ्य है

5.4 संयुक्ताक्षर मेँ 'म' यदि पहले आए तो उच्चारण बहाल होगा, जैसे – आमतला amtĕla

5.5 'ङ्', 'ञ' कभी तद्भव शब्दोँ के मध्य नहीँ आते, इनके बजाए ' ˛ ' (ओगोनेक) व्युत्पन्न हुआ है

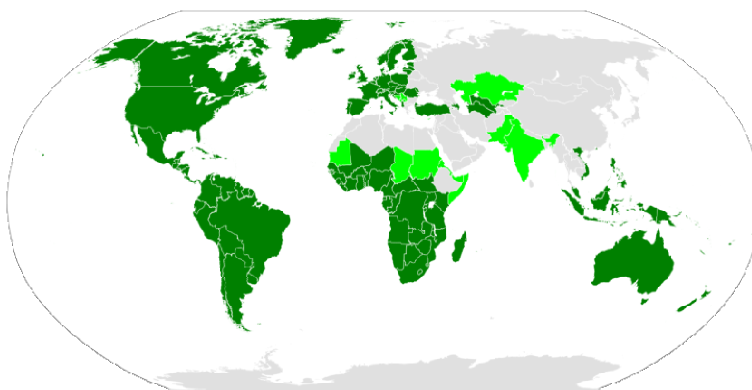
माँग –	mąg
चाँद –	cąd
काँच –	kąc
छाँछ –	ćąć

षष्टम
छठवाँ परब

6.1 'ऋ' 'ऌ' 'श्ऽ' इत्यादि के लिए क्रमशः **R̥r̥ , L̥l̥ , Ș̥ș̥** इस तरह का परिवर्तन (अक्षर के नीचे छोटा गोलाकार) किया जाएगा

6.2 अन्य वर्ण भी इसी फॉर्मैट का प्रयोग करेँगे

*** वर्ण विचार समाप्त ***



लातिन लिपि का व्यावहारिक प्रसार

गहरा हरा : लातिन लिपि एकमात्र आधिकारिक लिपि

हल्का हरा : लातिन लिपि अन्य लिपियों के साथ व्यवहार मेँ उपस्थित है

विश्व मेँ लातिन लिपि की पहुँच [स्रोत : विकिपीडिया]

परिशिष्ट

परिशिष्ट A : पन्ने 2 के लिए पारस्परिक IPA ‘अंतरराष्ट्रीय ध्वनात्मक वर्णमाला’ चिह्न

स्वर

हिंदी के अनुसार

मूल :	ə	aː	i	iː	u	uː	eː	ɛː	oː	ɔː
विकल्प :								æː		

संस्कृत के अनुसार

मूल :	r̩	r̩ː	l̩	l̩ː	əi	əu

दक्षिणी भाषाओं के अनुसार

मूल :	eːː	oːː
	(मूल स्वरों के दीर्घरूप)	

व्यंजन

पारंपरिक ध्वनियाँ संस्कृत से

मूल :	k	k^{h}	g	g^{h}	ŋ
	tʃ	tʃ^{h}	dʒ	dʒ^{h}	ɲ
	ʈ	ʈ	ɖ	ɖ^{h}	ɳ
	t	t^{h}	d	d^{h}	n
	p	p^{h}	b	b^{h}	m
	j	ɾ/r	l	v	
	ʃ	ʂ	s	ɦ	
			dʒɲ		

अन्य परिचित–अपरिचित महाप्राण ध्वनियाँ

मूल :	ɳ^{h}	n^{h}	m^{h}	
		ɾ^{h}	l^{h}	v^{h}
			ɭ^{h}	w^{h}
	ʃ^{h}	ʂ^{h}	s^{h}	

देशीय लौकिक ध्वनियाँ

मूल :			ɽ	ɽ^{h}
				w/ʋ

बाहरी :		x	ɠ	
	t͡s	t͡s^{h}	z	
			ʄ	
		θ	ɗ	ð
		f	ɓ	
			ɭ	
			ɻ	

पूर्णतः अजनबी (विदेशी) ध्वनियाँ

मूल :	ʕ		
	q	ɣ	
		d^{ʕ}	ʒ
		ð^{ʕ}	
	t^{ʕ}		
		s^{ʕ}	h

परिशिष्ट B : Iı इस अक्षर पर विस्तृत जानकारी

इस अक्षर को तुर्की और सोवियत संघ का इजाद माना जा सकता है, क्योंकि तुर्क भाषाओँ में ही सर्वप्रथम इस बिंदु–रहित 'आई' अक्षर का प्रयोग हुआ था। वैसे तो आजकल तुर्की और आज़रबायजान में इसका इस्तेमाल वैसे तो **IPA: /ɯ/** (जैसे हमारा **Ÿÿ**) के लिए होता है, और इससे मिलता–जुलता उनका दूसरा अक्षर **İi** हमारे 'इ' और 'ई' जैसे ही प्रयोग किया जाता है। आजकल क़जाक़िस्तान में भी बतौर तुर्क राष्ट्र एक लातिन लिपि का इस्तेमाल हो रहा है, हालाँकि यहाँ **ı** (इसका प्रयोग हमारी **Iı** की भाँति कराई जा रही है) अक्षर के लिए कोई बड़ा अक्षर साधारणतः नहीं है; अगर कोई है तो **I** है, लेकिन **I** का मुख्या इस्तेमाल भी इससे जुदा है ('इ' और 'ई' की भाँति)। यह घटना द्वंद्वकारक है।

हम नहीं चाहते थे कि ऐसा द्वंद्व छपाई और पढ़ाई के वक़्त विद्यमान रहे, इसीलिए हमने **Iı** के दोनों रूपों को साथ–साथ अपनाया, और **İi** के उच्चारण से पृथक् रखा। हमने चिह्न तुर्कों वाला अपनाया, लेकिन प्रयोग क़ज़ाक़ों जैसा किया।

परिशिष्ट C : नुक्ते 3.2.1 में प्रदत्त द्वितीय वर्ग के व्यंजनों के प्रयोग करते वक़्त कुछ निर्देश

(i) **Çç** कश्मीरी अक्षर 'च़' का प्रतिरूप है।

(ii) **Ğğ** उर्दू के 'ग़ैन' अक्षर से आए हुए शब्दों के लिए है।

ग़ैर – **ğăr**	ग़रीब – **ğĕrib**
वग़ैरह – **ŭĕğăra**	ग़िज़ा – **ğiza**
ग़ालिब – **ğalib**	बाग़ – **bağ**
मग़रूर – **mĕğrur**	दाग़ – **dağ**
मग़रिब – **mĕğrib**	नग़मा – **nĕğma**
ग़लत – **ğĕlĕt**	आग़ा – **ağa**
दिमाग़ – **dimağ**	बग़दाद – **bĕğdad**
ग़ज़ल – **ğĕzĕl**	मुर्ग़ – **murğ**
मग़ज़ – **mĕgz**	

(iii) 'न' के लिए हिंदी में चार ध्वनियाँ हैं और वे अलग अलग क़िस्म के वर्णों से पहले जुड़ने ने अलग अलग सुनाई देती हैं।

कंठ्य (क–वर्ग; क, ख, ग, घ) व्यंजनों के आगे	**ň**
तालव्य (च–वर्ग; च, छ, ज, झ) व्यंजनों के आगे	**ñ**
मूर्धन्य (ट–वर्ग; ट, ठ, ड, ढ) व्यंजनों के आगे	**ņ**

और दंत्य (त–वर्ग; त, थ, द, ध) व्यंजनोँ के आगे n

रहेगा। बहरहाल “तिनका, धुनकी, मनका” जैसे शब्दोँ मेँ n की ध्वनि स्पष्ट होने के कारण कोई विशेष वर्ण की आवश्यकता नहीं है।
साथ ही, शोध मेँ यह भी पाया गया है की फ़ारसी में यदि ‘नून’ किसी शब्द के बीच मेँ ‘हल्-युक्त’ हो तो वह भी उसके बाद के अक्षर के अनुसार भी ‘ङ्’ ‘ञ्’ आदि की ध्वनि देगा।

संस्कृत मेँ संधि करते समय और फ़ारसी में शब्दोँ के बीच – यह नियम कारगर है।

हालाँकि यह नियम अरबी के शब्दोँ पर लागू नहीँ होगा।

(iv) [v] और [w] के उच्चारण मेँ भेद –

1. संस्कृत के शब्दोँ (तत्सम) के उच्चारणोँ को हिन्दी मेँ यथासंभव ज्योँ का त्योँ संरक्षित करने की प्रथा हिन्दी शुद्ध उच्चारण मेँ देखा जाता है। अतः तदनुसार, आरंभ, मध्य एवम् अंत में ‘व’ का उच्चारण उसके गंभीर स्वरूप में अर्थात् [v] के रूप मेँ किया जाएगा।

2. किसी द्विवर्णीय अथवा त्रिवर्णीय संयुक्त व्यंजन मेँ ‘व्’ वर्ण का स्थान प्रथम या मध्य आने पर यथारूप [v] उच्चारण किया जाएगा। जैसे व्यक्ति, व्यय, व्रत आदि।

3. हालाँकि, यदि संयुक्त व्यंजन मेँ ‘व’ का स्थान अंत में आ जाए तो प्रचलन के अनुसार ‘व’ का उच्चारण परिवर्तित होकर हलका हो जाता है यानि [w] हो जाता है। जैसे कि पक्वता, तत्त्व आदि। ऐसा (यह तीसरा नियम) केवल हिंदी भाषा के लिए मान्य है। संस्कृत भाषा मेँ इसमेँ भी [v] का इस्तेमाल करते हैँ। यह नियम हिन्दी और संस्कृत शाब्दिक ध्वनि-क्रम मेँ भेद दर्शाती है। निम्नलिखित नियम अब हिंदी तद्भव, अरबी, फ़ारसी और तुर्की के शब्दोँ के लिए बताए जाएँगे।

4. हो सकता है कि फ़ारसी शब्दोँ मेँ अनजाने में ही ‘व’ का उच्चारण [v] जैसा प्रतीत होने लगे परंतु यह ‘व’ [v] नहीँ, [w] से थोड़ा गंभीर है, इतना गंभीर कि भेद करना थोड़ा कठिन है। इसलिए ऐसे मौक़े पर [w] ध्वनि आएगा।

5. अरबी मेँ मूलतः [w] विद्यमान है। तुर्की भाषा मेँ भी। हिंदी की व्युत्पत्ति मेँ [v] की ध्वनि का बिगड़ाव हुआ और अब यह [w] द्वारा प्रतिस्थापित हो गया। अतः यह कहना पूर्णतः मुनासिब होगा कि हिंदी तद्भव, अरबी, फ़ारसी और तुर्की शब्दोँ मेँ [w] की ध्वनि आएगी।

(v) Žž फ़ारसी ध्वनि ژ का प्रतिरूप है. इस ध्वनि के लिए बने अक्षर को उर्दू मेँ भी इस्तेमाल किया जाता है. इसे अब देवनागरी मेँ ‘झ़’ से दर्शाया जाता है, हालाँकि पहले इसे भी ‘ज़’ से दिखाया जाता रहा है. व्यावहारिक तौर पर मानक स्वीकृति न मिलने के कारण राजभाषावाले भी इसे ‘ज़’ से दर्शाते रहे हैँ. यह अनुचित है.

उदाहरण : रिपोर्ताज़ – **riportaž**

ज़ालाबरी – **žalabari**

HINDUSTANI SĔMAN LEḱĔN LIPI

Hindi lipi ka Romĕn sĕnskĕreņ, alĕm õr ĕŭam ka avahĕn

Hindi ɓaśa liḱne ke niyĕm

1. Hindike viram cihn, Ĕngrezike viram cihnǫpe aḋarit hą̃. Isliye Romĕn lipimę viram cihn ɓi Ĕngreziki tĕreh liḱe jayęge.

2. Hindike mûl sŭĕr (Devnagrimę अ) ĕb se 'Ĕĕ' liḱa jayega.

3. Hindike liye bĕnayi gĕyi Romĕn lipi Ĕlfabeţik õr Foneţik hogi.

   "Jãse bolo tãse liḱo"

4. In misalǫpe gõr kĕrę

   keh, tĕreh, gãhra, cãhãk, cehra, ćeh, zãhãr, jãhãnnum, ţãhĕlna, ţãhãrna, ḑãh jana, the, dehliz, Dehli (=Dilli), nãhãr, pãhla, pehli, peher, dopeher (=dopĕhĕr), śãhãr, sehĕr, sehri, beh jana, meher, ye, rehna, leher, ve, rãhman, rĕhîm.

5. In misalǫpe gõr kĕrę

   *bõhõt (=bõhut, bĕhut), mõhõbbĕt (=muhõbbĕt), Mõhõmmĕd, mohõlla (**bĕhuvĕcĕn** muhĕlle), rõśĕn, ronĕq (= rõnĕq).*

6. Ĕnunasik-yukt ("cĕndrĕbindu" ya ***Urdumę*** "nûnğunne" ŭale) sŭerǫke nîce "ogonek" cihn lĕgega.

   Ąą Ęę Įį Ǫǫ Ųų
   Ą̃ą̃ Ę̆ę̆ Ǭǭ

7. In misalǫpe gõr kĕrę

   cĕncĕl, mĕnc, mĕnjĕn, manja, kĕnca, ranja

   kĕnkĕŗ, mĕngĕl, sĕngĕm, sĕngĕt, Kĕnḱĕl (Uttĕraḱenḑ mę Adiśĕkti Mata Sĕti ka mayka), mungî (cįţi), xunxar, sĕnǵ.

   Ekdĕnt, mĕntĕr, śanti

   sanḑ, munḑŭana, nîlkĕnţ